ताकि खाली न हो पक्षियों के पानी के पात्र

हकेंविवि में मल्टीपोट साइफन तकनीक से एक साथ पानी के पात्रों को भरते लोग। (बाएं) अटेली में पक्षियों के लिए दाना-पानी का इंतजाम करते लोग।

अमर उजाला ब्यूरो

महेंद्रगढ़।

चढ़ते पारे, बढ़ती गर्मी से परेशान पक्षियों के लिए उपलब्ध पानी का पात्र कभी खाली न हो, इसके लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि) ने अपने यहां मल्टीपोट साइफन तकनीक को अपनाया है।

विश्वविद्यालय में इस तकनीक के माध्यम से एक दो नहीं बल्कि एक साथ पानी के चार से पांच पात्रों को भरा जा रहा है। विश्वविद्यालय कुलपति प्रोफेसर आरसी कुहाड़ ने इसकी शुरुआत करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय पर्यावरण संरक्षण और बेजुबान पक्षियों के प्रति हमेशा से ही संवेदनशील रहता है और इसी का नतीजा है कि कैंपस में जगह-जगह पक्षियों के लिए सुरक्षित बर्ड फीडर और पानी के पात्र उपलब्ध है। कुलपति प्रो. कुहाड़ कहते है कि पक्षियों के लिए दाने-पानी का इंतजाम करना विश्वविद्यालय या सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है, इस काम में हर मनुष्य को स्वेच्छा से सहयोग करना चाहिए।

क्या है मल्टीपोट साइफन तकनीक

:- विश्वविद्यालय में पर आधारित जल पात्रों को लगाने का काम नवप्रवर्तन प्रकोष्ठ की ओर से किया गया। प्रकोष्ठ के संयोजक प्रोफेसर नवल किशोर ने बताया कि इस तकनीक के माध्यम से जल पात्रों में कभी भी पानी खत्म नहीं होगा और इन्हें रोजाना किसी व्यक्ति को भरने की जरूरत भी नहीं रहेगी। इस तकनीक के विषय में प्रकोष्ठ से जुड़े ऋषिपाल व सुनील अग्रवाल ने बताया कि हमने इन पात्रों के लिए पानी की सप्लाई सीधे पंप से दी है जिससे कि जब भी यह पंप चलेंगे पात्र स्वयं ही भर जायेंगे। इस तकनीक के माध्यम से एक साथ पांच पानी के पात्र भरे जा रहे हैं यानी पक्षियों को एक ही जगह पर पीने का पानी उपलब्ध है।

हकेंवि ने अपनाई मल्टी पोट साइफन तकनीक

पक्षियों के लिए रखे गए पानी के पात्र

मंडी अटेली (ब्यूरो)। श्रीश्याम धर्मार्थ सेवा समिति द्वारा बुधवार को पक्षियों के लिए रेलवे स्टेशन पर पक्षियों के दाना-पानी की व्यवस्था की। गर्मी के मौसम को देखते हुए समिति के सदस्य प्रदीप गोयल, अरुण गुप्ता, उमेश वर्मा, चंदन चौहान, राकेश, जतिन, सौरभ, कार्तिक, प्रदीप, मनीष, सुनील, गौरव, मनोज, यश, आकाश आदि ने पक्षियों व जीव-जंतुओं के लिए दर्जनभर से अधिक पानी के सिकोरे लगाए और साथ ही प्रतिदिन सिकोरों को भरने व चुगा आदि डालने का संकल्प लिया।

पंछियों के लिए मल्टी पोट साइफन तकनीक अपनाई

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

चढ़ते पारे और बढ़ती गर्मी से परेशान पक्षियों के लिए रखे गए पानी के पात्र कभी खाली न हों, इसके लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि) ने अपने यहां मल्टीपोट साइफन तकनीक को अपनाया है। विवि में इस तकनीक के माध्यम से एक-दो नहीं, बल्कि एक साथ पानी के चार-पांच पात्रों को भरा जा रहा है।

विवि कुलपति प्रोफेसर आरसी कुहाड़ ने इसकी शुरुआत करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय पर्यावरण संरक्षण और बेजुबान पक्षियों के प्रति हमेशा संवेदनशील रहा है। इसी का नतीजा है कि कैंपस में कई जगह पक्षियों के लिए सुरक्षित बर्ड फीडर और पानी के पात्र उपलब्ध है। कुलपति ने कहा कि पक्षियों के लिए दाने-पानी का इंतजाम करना विवि या सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है, इसमें हर मनुष्य को स्वेच्छा से सहयोग करना चाहिए।

महेंद्रगढ़. हकेंवि में पक्षियों के लिए लगाई गई मल्टीपोट साइफन तकनीक

विश्वविद्यालय में मल्टीपोट साइफन तकनीक पर आधारित जल पात्रों को लगाने का काम नवप्रवर्तन प्रकोष्ठ की ओर से किया गया। प्रकोष्ठ के संयोजक प्रोफेसर नवल किशोर ने बताया कि इस तकनीक के माध्यम से जल पात्रों में कभी भी पानी खत्म नहीं होगा और इन्हें रोजाना किसी व्यक्ति को भरने की जरूरत भी नहीं रहेगी। प्रकोष्ठ से जुड़े ऋषिपाल व सुनील अग्रवाल ने बताया कि हमने इन पात्रों के लिए पानी की सप्लाई सीधे पम्प से दी है, जब भी ये पम्प चलेंगे पात्र स्वयं भर जाएंगे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने बताया कि पानी के पात्रों के अलावा विश्वविद्यालय में कई जगह पक्षियों के लिए बर्ड फीडर भी लगे हैं। इनकी मदद से पक्षियों को बिना किसी खतरे के पेड़ों के तनों पर ही दाना उपलब्ध कराया जा रहा है। इस बढ़ती गर्मी के चलते अब पानी का भी इंतजाम पक्षियों के लिए कर दिया गया है।

पक्षियों को दाना देने के लिए विवि में है अलग से कोष

बता दें कि विश्वविद्यालय में पक्षियों को दाना उपलब्ध कराने के लिए पहले से अलग से कोष विकसित किया जा चुका है। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय कर्मचारियों व शिक्षकों के सहयोग से पक्षियों को दाना उपलब्ध कराया जाता है। विश्वविद्यालय में पक्षियों के लिए पानी के पात्र विकसित करने वाली नवप्रवर्तन प्रकोष्ठ की टीम में छात्र इनोवेटर के तौर पर अमित यादव, प्रीति लांबा, रमेश शर्मा और जयवीर ने भी सहयोग प्रदान किया।

महेंद्रगढ़। हकेंविवि में कुलपति आरसी कुहाड़ मल्टीपोट साइफन तकनीक पर आधारित जल पात्रों का निरीक्षण करते। फोटो : हरिभूमि

विवि बेजुबान पक्षियों के प्रति बेहद संवेदनशील

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

- हकेंविवि ने अपनाई मल्टी पोट साइफ न, तकनीक जिससे कभी खाली न हो पक्षियों के लिए पानी का पात्र

चढ़ते पारे बढ़ती गर्मी से परेशान पक्षियों के लिए उपलब्ध पानी का पात्र कभी खाली न हो इसके लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने अपने यहां मल्टीपोट साइफन तकनीक को अपनाया है। विश्वविद्यालय में इस तकनीक के माध्यम से एक दो नहीं बल्कि एक साथ पानी के चार से पांच पात्रों को भरा जा रहा है।

हर काम में हो सहयोग

विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने इसकी शुरुआत करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय पर्यावरण संरक्षण और बेजुबान पक्षियों के प्रति हमेशा से ही संवेदनशील रहता है और इसी का नतीजा है कि कैंपस में जगह-जगह पक्षियों के लिए सुरक्षित बर्ड फीडर और पानी के पात्र उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि पक्षियों के लिए दाने-पानी का इंतजाम करना विश्वविद्यालय या सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है, इस काम में हर मनुष्य को स्वेच्छा से सहयोग करना चाहिए। विश्वविद्यालय में मल्टीपोट साइफन तकनीक पर आधारित जल पात्रों को लगाने का काम नवप्रवर्तन प्रकोष्ठ की ओर से किया गया। प्रकोष्ठ के संयोजक प्रो. नवल किशोर ने बताया कि इस तकनीक के माध्यम से जल पात्रों में कभी भी पानी खत्म नहीं होगा और इन्हें रोजाना किसी व्यक्ति को भरने की जरूरत भी नहीं रहेगी। इस तकनीक के विषय में प्रकोष्ठ से जुड़े श्रिपाल व सुनील अग्रवाल ने बताया कि हमने इन पात्रों के लिए पानी की सप्लाई सीधे पम्प से दी है जिससे कि जब भी यह पम्प चलेंगे पात्र स्वयं ही भर जायेंगे। इस तकनीक के माध्यम से एक साथ पांच पानी के पात्र भरे जा रहे हैं यानी पक्षियों को एक ही जगह पर पीने का पानी उपलब्ध है।

ह.कें.वि. ने अपनाई मल्टी पोट साइफन तकनीक

कभी खाली न हो पक्षियों के लिए पानी का पात्र

कुलपति बोले-विश्वविद्यालय बेजुबान पक्षियों के प्रति बेहद संवेदनशील

महेन्द्रगढ़, 17 मई (मोहन/परमजीत): चढ़ते पारे, बढ़ती गर्मी से परेशान पक्षियों के लिए उपलब्ध पानी का पात्र कभी खाली न हो, इसके लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (ह.कें.वि.) ने अपने यहां मल्टीपोट साइफन तकनीक को अपनाया है। विश्वविद्यालय में इस तकनीक के माध्यम से एक 2 नहीं बल्कि एक साथ पानी के 4 से 5 पात्रों को भरा जा रहा है। विश्वविद्यालय कुलपति प्रोफैसर आर.सी. कुहाड़ ने इसकी शुरुआत करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय पर्यावरण संरक्षण और बेजुबान पक्षियों के प्रति हमेशा से ही संवेदनशील रहता है और इसी का नतीजा है कि कैम्पस में जगह-जगह पक्षियों के लिए सुरक्षित बर्ड फीडर और पानी के पात्र उपलब्ध है। कुलपति प्रो. कुहाड़ कहते हैं कि पक्षियों के लिए दाने-पानी का इंतजाम करना विश्वविद्यालय या सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है, इस काम में हर मनुष्य को स्वेच्छा से सहयोग करना चाहिए।

विश्वविद्यालय में मल्टी पोट साइफन तकनीक पर आधारित जल पात्रों को लगाने का काम नवप्रवर्तन प्रकोष्ठ की ओर से किया गया। प्रकोष्ठ के संयोजक प्रो. नवल किशोर ने बताया कि इस तकनीक के माध्यम से जल पात्रों में कभी भी पानी खत्म नहीं होगा और इन्हें रोजाना किसी व्यक्ति को भरने की जरूरत भी नहीं रहेगी। इस तकनीक के विषय में प्रकोष्ठ से जुड़े गशिपाल व सुनील अग्रवाल ने बताया कि हमने इन पात्रों के लिए पानी की सप्लाई सीधे पम्प से दी है जिससे कि जब भी यह पम्प चलेंगे पात्र स्वयं ही भर जाएंगे। इस तकनीक के माध्यम से एक साथ 5 पानी के पात्र भरे जा रहे हैं यानी पक्षियों को एक ही जगह पर पीने का पानी उपलब्ध है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने बताया कि पानी के पात्रों के अलावा विश्वविद्यालय में जगह-जगह पक्षियों के लिए बर्ड फीडर भी लगे हैं। इनकी मदद से पक्षियों को बिना किसी खतरे के पेड़ों के तनों पर ही दाना उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस बढ़ती गर्मी के चलते अब पानी का भी इंतजाम पक्षियों के लिए कर दिया गया है और इस तरह विश्वविद्यालय में पक्षियों को दाना व पानी दोनों ही सहज उपलब्ध है। यहां बता दें कि विश्वविद्यालय में पक्षियों को दाना उपलब्ध करवाने के लिए पहले से अलग से कोष विकसित किया जा चुका है। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय कर्मचारियों व शिक्षकों के सहयोग से पक्षियों को दाना उपलब्ध करवाया जाता है। विश्वविद्यालय में पक्षियों के लिए पानी के पात्र विकसित करने वाली नवप्रवर्तन प्रकोष्ठ की टीम में छात्र इनोवेटर के तौर पर अमित यादव, प्रीति लाम्बा, रमेश शर्मा और जयवीर ने भी सहयोग प्रदान किया।

पंजाब केसरी ई-पेपर
Thu, 18 May 2017
epaper.punjabkesari.in//c/19134206

हकेंविवि ने पक्षियों के प्रति दिखाई संवेदनशीलता

संवाद सहयोगी, महेंद्रगढ़ : भीषण गर्मी के इस मौसम में पक्षियों के लिए उपलब्ध पानी का पात्र कभी खाली न हो, इसके लिए हरियाणा केंद्रीय विवि ने मल्टीपोट साइफन तकनीक को अपनाया है। विवि में इस तकनीक के माध्यम से एक दो नहीं बल्कि एक साथ पानी के चार से पांच पात्रों को भरा जा रहा है। विवि कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने इसकी शुरुआत करते हुए कहा कि विवि पर्यावरण संरक्षण और बेजुबान पक्षियों के प्रति हमेशा से ही संवेदनशील रहा है और इसी का नतीजा है कि विवि प्रांगण में जगह-जगह पक्षियों के लिए सुरक्षित बर्ड फीडर और पानी के पात्र उपलब्ध हैं।

कुलपति प्रो. कुहाड़ ने कहा कि पक्षियों के लिए दाने-पानी का इंतजाम करना विवि या सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है, इस काम में हर मनुष्य को स्वेच्छा से सहयोग करना चाहिए। विवि में मल्टीपोट साइफन तकनीक पर आधारित जल पात्रों को लगाने का काम नवप्रवर्तन प्रकोष्ठ की ओर से किया गया। प्रकोष्ठ के संयोजक प्रो. नवल किशोर ने बताया कि इस तकनीक के माध्यम से जल पात्रों में कभी भी पानी खत्म नहीं होगा और इन्हें रोजाना किसी व्यक्ति को भरने की जरूरत भी नहीं रहेगी।